Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

APF–2132

M.A. (Final) Examination, 2022

PHILOSOPHY

Paper – VI, VII, VIII (ii)

(Jainism)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

Section–A **(Marks : 2 × 10 = 20)**

Note :– Answer all *ten* questions (Answer limit **50** words). Each question carries **2** marks.

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

Section–B **(Marks : 8 × 5 = 40)**

Note :– Answer any *five* questions out of seven (Answer limit **200** words). Each question carries **8** marks.

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

Section–C **(Marks : 20 × 2 = 40)**

Note :– Answer any *two* questions out of four (Answer limit **500** words). Each question carries **20** marks.

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

Section–A

(खण्ड–अ)

1. Define the following terms :

   निम्नलिखित पदों को परिभाषित कीजिए :

   (i) Jiva Dravya

   जीव द्रव्य

   (ii) Actor (Karta)

   कर्ता

   (iii) Ajiva Dravya

   अजीव द्रव्य

   (iv) Dharma

   धर्म

   (v) Kal

   काल

   (vi) Bhavas

   भव

   (vii) Syadvad

   स्याद्वाद

   (viii) Samvara

   संवर

(ix) Mati Jnana

मति ज्ञान

(x) Moksha

मोक्ष

Section–B

(खण्ड–ब)

2. Discuss the nature of Dravya according to Jain philosophy.

जैन दर्शन के अनुसार द्रव्य के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

3. How do Jain philosophy Refute Buddhist concept of Nairatmyavad ?

बौद्धों के नैरात्मयवाद का जैन दर्शन किस प्रकार खण्डन करते हैं ?

4. Explain nature and types of Ajiva Dravya in Jain metaphysics.

जैन तत्त्वमीमांसा में अजीव द्रव्य के स्वरूप एवं प्रकारों को समझाइए।

5. Describe the difference between Naya and Pramana and explain the types of Naya.

नय एवं प्रमाण में भेद कीजिए तथा नय के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

6. Can Akash and Kal be considered Dravya. Explain Jain view and compare it with that at Charvakas.

क्या आकाश और काल को द्रव्य कहा जा सकता है ? इस हेतु जैन मत को स्पष्ट करते हुए चार्वाकों के मत से तुलना कीजिए।

7. Discuss the Jain view about nature of knowledge and its relation to self ?

ज्ञान के स्वरूप तथा जीव से इसके संबंध के बारे में जैन दृष्टिकोण की समीक्षा कीजए।

8. Describe the concept of Samyak Charitra in detail.

सम्यक् चरित्र की अवधारणा का विवेचन कीजिए।

Section–C

(खण्ड–स)

9. How does Jainism differ from Mimansa and Nyaya in proving the validity of knowledge ? Discuss.

   ज्ञान की प्रामाणिकता को सिद्ध करने में न्याय और मीमांसा से जैन का क्या भेद है ? वर्णन कीजिए।

10. Write an essay on the nature of self bondage and liberation according to Jainism.

    जैन दर्शन के अनुसार आत्म के बंधन एवं मोक्ष के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

11. Write the concept of Syadavada. Why are the only seven Bhangas ? Explain the importance of each Bhang ?

    स्याद्वाद की अवधारणा को लिखिए। केवल सात भंग ही क्यों होते हैं ? प्रत्येक भंग के महत्व की व्याख्या कीजिए।

12. Describe the means of Moksha according to Jainism explaining Samyak Darshan-Gyan-Charitrani Moksha Marg.

    सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चरित्राणी मोक्ष मार्ग का विवेचन करते हुए जैन मत के अनुसार मोक्ष के साधनों का वर्णन कीजिए।